

श्रीहित चाचा वृंदावन दस जी महाराज कृत श्री वृंदावन धाम कौ मंडल



श्री हित प्रताप चंद्र गोस्वामी जी महाराज

श्री हित मन मोहन गोस्वामी जी महाराज

श्री हित निमिष गोस्वामी जी महाराज



!! श्रीहित राधावल्लभो जयति !!

!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

जै जै श्री वृन्दावन रसिकन प्राण हैं ।
प्रभु-पद दाता सबनि, रसहिं की खान हैं ॥
कैसौउ पापी करत, आनि जो बास है ।
दूर होत तत्काल तासु की त्रास है ॥
तत्काल त्रास जू जात, ताकौ होत निर्मल गात है ।
पावत महल की टहल जहँ नित, सहचरिन कौ वास है ॥
दसरत जुगल छबी नैन अनुपम, करत गुन कौ गान है ।
जै जै श्रीवृन्दावन रसिकन प्राण हैं ॥ 1 ॥

जै जै श्रीवृन्दावन, अति शोभा मई ।
पिय प्यारी कौ धाम, प्रेम विधि-निर्मई ॥
अद्भुत छटा विलोकि, दृगनि सुख होत है ।
निर्तत जुगल किशोर, सु जगमग जोति है ॥
जोत जगमग होत, तिनकी कहा शोभा गाइये ।
दस-नौ चरन के चिन्ह, श्री यमुना-पुलिन में पाइये ॥
गावत मोर मराल जिनकी, केलि कल नित नित नई ।
जै जै श्रीवृन्दावन, अति शोभा मई ॥ 2 ॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज

श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृन्दावन

www.shriradhavallabhla.com





!! श्रीहित राधावल्लभो जयति !!

!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

जै जै श्रीवृन्दावन कहा महिमा कहौं ।
मोमति एती नाहिं, अन्त ताकौ लाहौं ॥
शेष महेश सुरेश, न पावत पार कौं ।
अज-मति हू वौराय, करत जु विचार कौ ॥
विचार कौं बौराय अज-मति, कहा गुन वरनन करूँ ।
अति दिव्य जटित मणीन भूमि सौं ध्यान कैसे हौं धरूँ ॥
निसि दिवस करत विचार यह, आकाश फल कैसे लहौ ।
जै जै श्रीवृन्दावन कहा महिमा कहौं ॥ 3 ॥

जै जै श्री वनराजहिं मस्तक नाइये ।
याही के परताप जुगल पद पाइये ॥
कार्तिक सुदि तेरस कौं जन्म जू जानिये ।
दुतिय प्रभु कौ रूप, सु ताकौं मानिये ॥
मानि प्रभु कौ रूप ताकौं, विटप वेलि भ्राज हीं ।
भानुजा के तीर दोऊ, स्याम स्याम राज हीं ॥
वृन्दावन हित रूप मंगल, रसिक जन सुखादाइये ।
जै जै श्री वनराजहिं मस्तक नाइये ॥ 4 ॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृन्दावन
www.shriradhavallabhla.com

